मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १५३ • जनवरी -२०२०

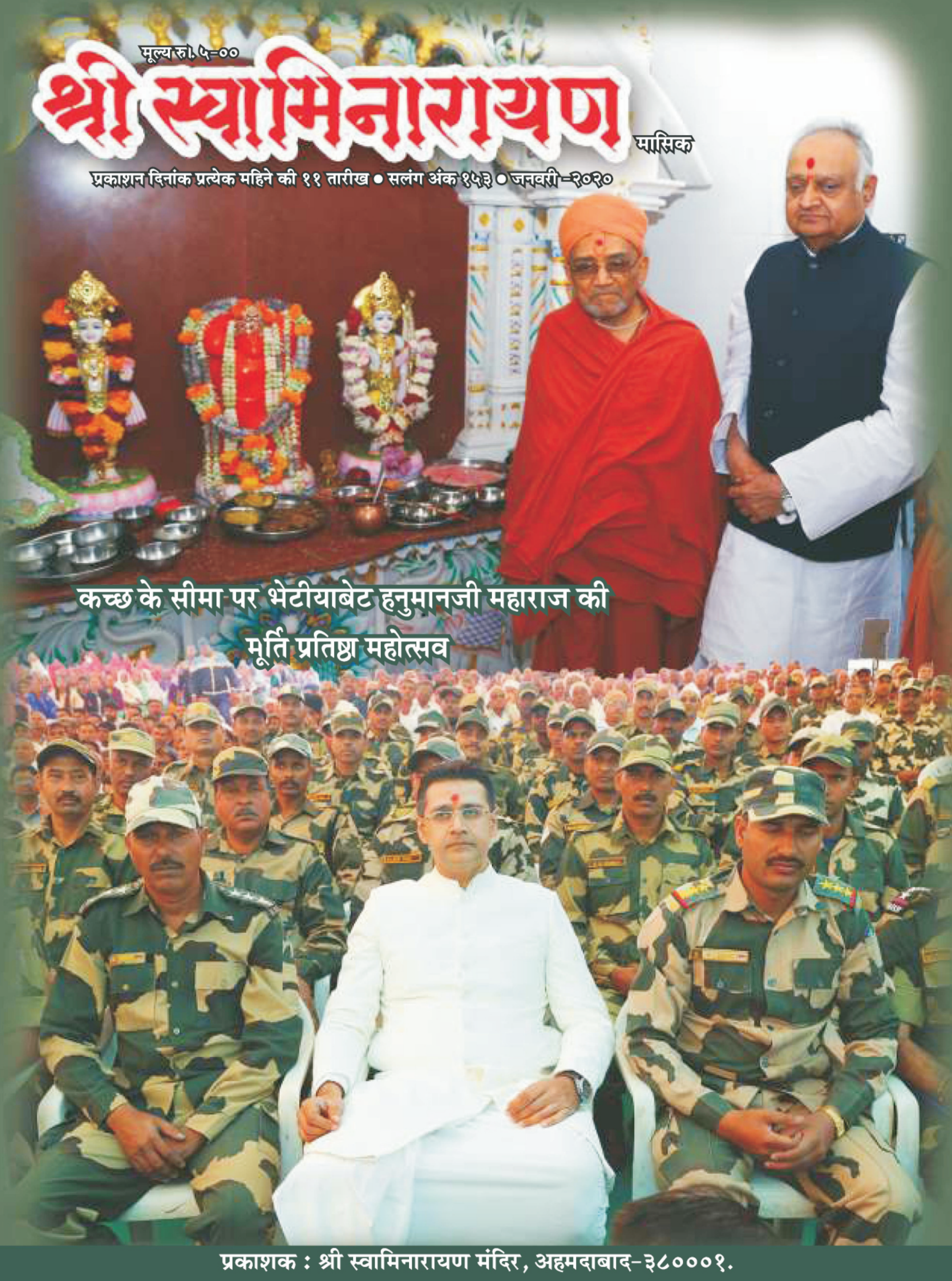

कच्छ के सीमा पर भेटीयाबेट हनुमानजी महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद-३८०००१.

(१) कलोल पंचवटी श्री स्वामिनारायण मंदिर के दूसरे पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी के अभिषेक की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) वडु गाँव में बहनो के नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की विधि करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (३) अपने कालुपुर मंदिर में धनुर्मास धून महोत्सव का लाभ लेते हुए संत हरिभक्त। (४) भगवानपुरा - प्रतापपुरा में अपने मंदिर द्वारा गरीब बच्चो को अन्न और जाकिट का वितरण किया गया।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १३ ● अंक : १५३

जनवरी-२०२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अनुक्रमणिका

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	सोलह संस्कार	०६
०४.	विघ्नहर्ता श्री गणेश की प्रार्थना	०८
०५.	भेडियाबेट में हनुमानजी महाराज का प्रतिष्ठोत्सव	१०
०६.	गाना बंद करे	१४
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१६
०८.	सत्संग बालवाटिका	१८
०९.	भक्ति सुधा	२०
१०.	सत्संग समाचार	२०

अस्मदीयम्

इस पृथ्वी के मनुष्यो ने प्रकृति के साथ इतनी छेडछाड की है कि पर्यावरण को सर्वाधिक हानि पहुँचाया है । प्राकृतिक ऋतुचक्र की संरचनामे बदलाव आ गया है । इस वर्ष वर्षा काल में घुँआधार वर्षा हुई । वर्तमान समय में कही न कही बिना मौसम की वर्षा हो रही है । जिससे कृषि में अधिक हानि हुई है । प्रकृति के सामने व्यक्ति बौना सिद्ध हुआ है । इसी प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण की हानि करते रहे तो कुछ वर्षो के बाद भयंकर परिणाम प्राप्त होगा । समुद्र के किनारे बड़े शहरो को काफी क्षति हो सकती है । असहनीय गर्मी और ठंड का प्रभाव होगा । अनराधार वर्षा और तूफान इस पृथ्वी को छिन्न-भिन्न कर देगा । इसलिये यदि हम सबको इस परिणाम से वचना हो तो पर्यावरण की सुरक्षा में तुरंत लग जाना चाहिए । नही तो आने वाला भविष्य सभी के लिये चुनौती बनने वाली है।

यह अंक जब आप के पास पहुँचेगा । तब तक धर्नुमास पूर्ण हो चुका होगा । इस मास में श्रीहरिनाम स्मरण विशेषतर किया गया । जिस का हिसाब अक्षरधाम में लिखा जा रहा है । जिसने भी धुन का लाभ लिया उसके खाते में जमा हो गया । धर्नुमास पूर्ण होने के बाद भी श्रीहरि का नामस्मरण प्रारम्भ रखे । हम लोगो को श्रीहरि के नाम का स्मरण आठो प्रहर करते रहना है । इस लिये अपने लिये स्थायी धर्नुमास है । जिस प्रकार इस जगत में व्यसन जीव को पकडा है । उसी प्रकार भगवान का भजन-कीर्तन स्मरण का व्यसन रखे । ताकि नाम के व्यसन से छुटकारा न मिले । कभी छूट जाये तो अफसोस और दुख हो । इस लिये आप सभी श्रीहरि के आश्रित भगवान के भजन का व्यसन रखे । जिससे अन्त समय याद आने पर जीव का कल्याण हो जाता है।

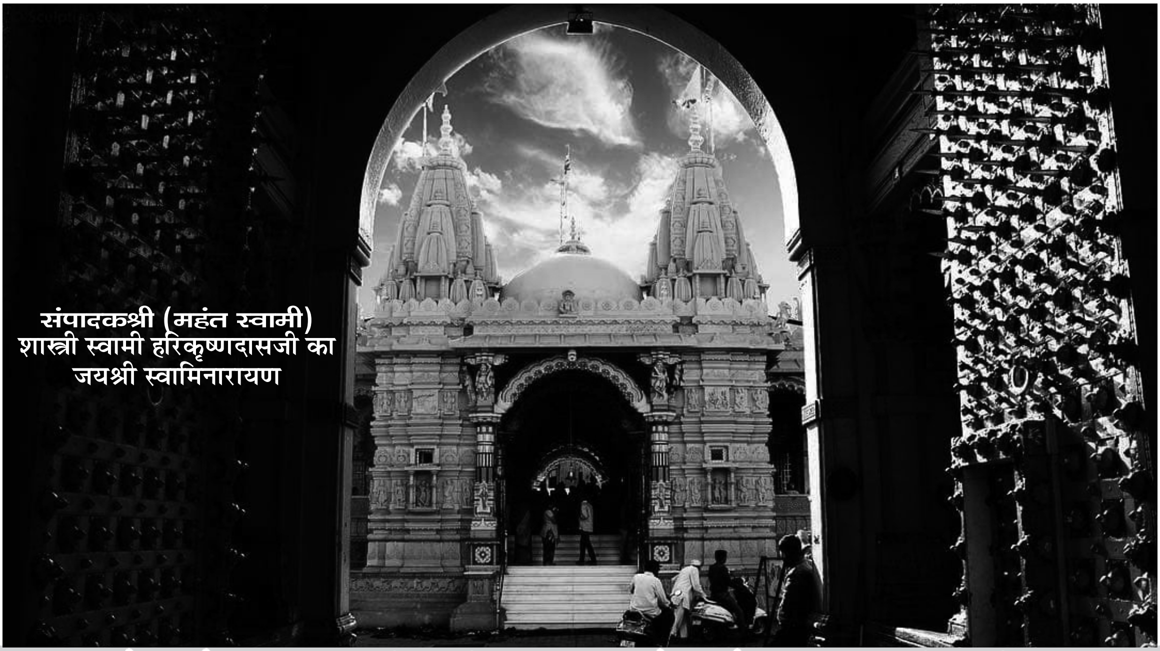

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१९)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर गाँधीनगर (से-२) पाटोत्सव अवसर पर पधरामणी।

२ वाली (राजस्थान) प.भ. किशनजी डायाजी माली के निवास स्थान पर पधरामणी।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर बडु बहनो के नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर पधरामणी।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी द्वितीय पाटोत्सव अवसर पर पधरामणी।

५-६ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर पधरामणी।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर बणझर (सरखेज) पाटोत्सव पर पधरामणी।

९-१० (भारत, पाकिस्तान बार्डर पर) भुज (कच्छ) मंदिर द्वारा आयोजित भेडियाबेट श्री हनुमानजी महाराज के नूतन मंदिर में पुनः प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधरामणी।

११ डांगरवा (पाटीदार) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव अवसर पर पधरामणी।

१३ नेत्रामणी (ईदर देश) गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अवसर पर पधरामणी।

१४ गाँधीनगर (से-२३) श्री स्वामिनारायण मंदिर ''वचनामृत ज्ञान वर्षा महोत्सव'' पर पधरामणी।

२४-२७ नैरोबी ईस्ट आफ्रिका स्वामिनारायण सत्संग मंडल पाटोत्सव और मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अवसर पर पधरामणी।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(दिसम्बर-२०१९)

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर पाटोत्सव अवसर पर पधरामणी।

३ भुज (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव अवसर पर पधरामणी।

५ नाराणपुरा मंदिर कथा अवसर पर आगमन।
नवा वणझर श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव पर पधरामणी।

६ डांगरवा (पाटीदार) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर पधरामणी।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर पर पधरामणी।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब पालडी में शाकोत्सव अवसर पर पधरामणी।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण शाकोत्सव अवसर पर पधरामणी।

१९-२१ श्री पूर्व आफ्रिका श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल नैरोबी में पाटोत्सव अवसर पर पधरामणी।

सोलह संस्कार

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने हिन्दू सनातन परम्परा में मनुष्य के जीवन के सोलह संस्कार किये जाते है। संस्कार अर्थात् संशोधन – परिशोधन, शुद्धीकरण हमारे शास्त्र आत्मा के पुर्नजन्म में विश्वास रखते है । संस्कार के द्वारा जीव की आध्यात्मिक आदि भौतिक आदि दैविक इन तीन प्रकार की शुद्धि की क्रिया की जाती है। हमारे शास्त्र मानव जन्म को मोक्ष-मुक्ति का अधिकारी माना जाता है । संस्कार द्वारा दोष मुक्त होकर उर्ध्वगमन किया जा सकता है । जन्मो से चौरासी लाख योनियो में प्रसार करके आने वाले दोष सूक्ष्म वासनाये, विचारो के अंश स्वभाव दोष कायिक-वाचिक खान-पान को दोष के अवशेष जो साथ मे आ जाते है। उसमें से शुद्ध होकर जीवन को एक क्रम के बाद अगला क्रम संस्कार करने से सभी दोषो से मुक्त होकर, एक आदर्श मानव जीवन, व्यक्ति का विकास उत्तम श्रेष्ठ पवित्र आदर्श जीवन बनाया जा सकता है। संस्कार उसका पालन अनिवार्य है। जो व्यक्ति सोलह संस्कारो का पालन नहीं करता है। उसका जीवन अपूर्ण है। संस्कारो की कमी को किसी विधि-विधान से दूर नही कर सकते है । एक-दो संस्कार छूट जाये तो उसकी कमी ही रहती है । अपनी प्राचीन आर्य प्रणाली सोलह संस्कारो में विश्वास रखती है। जो आज ग्रामीण जीवन में पूर्ण दिखाई देता है। संस्कार वैज्ञानिक रुप से मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते है । सारे संस्कार से समयनुसार यथाविधिवैदिक मंत्रो द्वारा मंत्रित किया जाता है । इष्टदेव भगवान श्री सहजानंद स्वामी ने शिक्षापत्री श्लोक संख्या ९१ में अपने हाथो से अपने आश्रितो को आज्ञा किये है। ''जो द्विज उसे गर्भाधान आदि संस्कार आहनिक श्राद्ध ये तीनो गृहसूत्र के अनुसार करना चाहि। जैसी धन-सम्पत्ति की शक्ति हो।

संस्कार बिना जीवन का जन्म जन्मांतर का स्वभाव दोष वाणी, व्यवहार का दोष आचरण का दोष दृष्टि दोष, शारिरीक मानसिक कमी धर्म, ज्ञान, वैराग्य सद्गुणो का अभाव, परिवार के प्रति असहिष्णुता इस प्रकार के अनेक दोष मानव के अंदर आ जाते है । जिससे वह दुःखी हो जाता है।

सोलह संस्कारो के नाम और विधियाँ बताई जा रही है।

(१) **गर्भाधान संस्कार :** हिन्दू परम्परा में चार संस्कार मानव के जन्म से पूर्व तथा ग्यारह संस्कार जन्म के पश्चात और बाद में एक संस्कार मृत्यु के बाद किया जाता है। गर्भाधान संस्कार माता-पिता अपने वंश की वृद्धि की मनोवांछित कुल दीपक योग्य गुणवान तेजस्वी संतान की कामना करके ऋणानुबंधी आत्मा की प्रार्थना करके सौभाग्यवती होने की प्रार्थना-कामना की जाती है।

(२) **पुंशवन :** गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास के लिये वेदोक्त विधिसे मंत्रो द्वारा संस्कार करने से बालक स्वस्थ और बुद्धिशाली बनाया जाता है।

(३) **सीमन्त :** यह संस्कार गर्भ के चौथे, छठ्ठे, आँठवे महीने में गर्भस्थ शिशु का शारीरिक, मानसिक विकास होने लगता है। माता के वाणी-व्यवहार के साथ एकीकरण होने लगता है। इस लिये माता का अनुकरण करता हुए बच्चा माता के आचार-विचार श्रवण कीर्तन की सावधानी रखी जाती है।

(४) **जातकर्म :** बालक का जन्म होने के पश्चात जात कर्म किया जाता है। उसमें बालक के जन्म के दोष तथा गर्भ में रहने के दोष से मुक्त करके दीर्धायु का मंत्र पढा जाता है। उसी प्रकार कुल परम्परा की देवी-देवताओ की सुरक्षा कवच करने के बाद देवो और पित्रो की पूजा द्वारा तृप्ति की जाती है। और मधु को ओष्ठ से लगाते है। तथा नाभिनाल को काटा जाता है।

(५) **नामकरण :** संतान के जन्म से ग्यारहवे दिन नामकरण किया जाता है। विद्वान ब्राह्मण द्वारा जन्म समय के आधार पर जन्म पत्रिका बनायी जाती है। तथा उसी अनुरुप नामरखा जाता है।

(६) **निष्क्रमण :** निष्क्रुमण अर्थात् बाहर निकालना। जन्म के चौथे महीने बच्चे को घर से बाहर लाते है। तब पंचमय भूत पृथ्वी, जल, तेज, वायु एवम् आकाश का दर्शन करके पुत्र के कल्याण की प्रार्थना करते है।

(७) **अन्नप्रसान :** बालक के जन्म से साँतवे महीने में बालक को खुशी से अन्न खिलाया जाता है। उस दिन अन्नपूर्णादेवी की पूजा की जाती है।

(८) **चौल संस्कार (मुंडन) :** जन्म के एक-तीन-पाँच वर्षी उम्र में मुंडन द्वारा गर्भ के केश उतार दिये जाते है। जिससे बालक के बुद्धि का विकास होता है। तथा किटाणुओं का नाश हो जाता है।

(९) **विद्यारम्भ :** इस संस्कार के माध्यम से बालक को यथोचित्र शिक्षा देने के लिये शारदादेवी या विद्यादेवी की पूजा की जाती है।

(१०) **कर्णभेदन :** बच्चे की सोने की सूई द्वारा कान छेदा जाता है। उसमें गहने पहनने और एक्यूप्रेशर द्वारा मस्तिकष्क में रक्त प्रवाह तथा स्मरण शक्ति बढती है।

(११) **उपनयन :** गुरु के पास जाकर दूसरा जन्म द्विजत्व देकर तीन सूत्रो से युक्त जनेउ धारण की विधिकी जाती है। यज्ञोपवीत्र की गाँठ में ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा नव सूत्र धागे में ऊँकार, अग्नि, शेष, चंद्र, पितृ, प्रजापति, अग्नि, सूर्यदेव, विश्वदेव भावनायुक्त पूजा की जाती है।

(१२) **वेदाम्भ :** बच्चे को शिक्षा के साथ वेद का ज्ञान कराया जाता है।

(१३) **केशानी संस्कार :** ब्रह्मचर्य आश्रम में अध्ययन से पूर्व केशान्त अर्थात् ब्रह्मचर्य की सिद्धि के लिये सिर का मुंडन रखा जाता है। क्योकि केश में कामदेव का वास होता है।

(१४) **समावर्तन :** शिक्षापूर्ण करके घर आने का संस्कार।

(१५) **विवाह :** सर्वाधिक महत्वपूर्ण लग्न संस्कार वर-वधु अग्नि के सामने धर्म का पालन करने के लिये देवो की साक्षी में परिक्रमा करता है। तथा पितऋण से मुक्त होता है।

(१६) **अन्तेष्ठि :** देहत्याग के बाद जो अग्निलग्न के समय जलाई गई रहती है। वह आग घर से लाकर स्मशान में शरीर को दाह में संस्कार के लिये प्रयोग करते है। वह आत्मा सभी ऋणो से मुक्त बनती है।

विघ्नहर्ता

श्री गणेश की प्रार्थना

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ गणपतिस्तोत्रम् ॥

विघ्नेश विघ्नचयखण्डननाधेयं श्रीशंकरात्मज सुराधिपवन्द्यपाद ।
दुर्गामहाव्रतफलाखिलमंगलात्मन्
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥१॥
सत्यद्मरागमणिवर्णशरीरकान्ति
श्रीसिद्धिबुद्धिपरिचर्चितकुंकुमश्रीः ।
दक्षस्तनेवलयितातिमनोज्ञ शुण्डो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥२॥
पाशांकुंशाब्जपरशूंश्च दधच्चतुर्भिर्दोर्भि-
श्चशोणकुसुमस्त्रगुमांग जातः ।
सिन्दुरशोभितललाटविधुप्रकाशो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥३॥
कार्येषुविघ्नचयभितविरंचिमुख्यैः
सम्पूजितः सुरवैरपि मोदकाद्यैः ।
सर्वेषु च प्रथममेव सुरेषु पूज्यो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥४॥
शीघ्रांचनस्खलनचुंचुंरवोर्ध्वकण्ठ-
स्थूलोन्दुरूद्रवणासितदेवसंघः ।
शूर्पश्रुतिश्चपृथुवर्तुलतुंगतुन्दो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥५॥
यज्ञोपवितजलम्भितनागराजो
मासादिपुण्यददृशीकृतऋक्षराजः ।
भक्ताभयप्रद दयालय विघ्नराजो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥६॥
सद्रवसारततिराज सत्किरीटः
कौसुम्भचारुवसनद्वय उर्जितश्रीः ।
सर्वत्रमंगलकरस्मरणप्रतापो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥७॥
देवान्तकाद्यसुरभीतसुरार्तिहर्ता
विज्ञानबोधनवरेण तमोपहर्ता ।
आनन्दितत्रिभुनेश कुमारबन्धो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥८॥
॥ इति श्रीशतानन्दमुनिविरचितं सत्संगिजीवनस्थं
श्रीगणपतिस्तोत्रम् ॥

श्रीहरिने शिक्षापत्री में पाँच देवो को सदैव पूजने को कहा गया है । उसमें गणेश का स्थान तीसरा है । और सर्वदेवो में गणेशजीकी सर्व प्रथम पूज्य कहे है, जीवन में आने वाले सभी विघ्नो को दूर करने की क्षमता उनमें है । वे विघ्न के अधिष्ठाता देव है । इस कारण से स्वयं परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण ने जब मानव शरीर धारण किये । तथा अपने स्वरुप का ज्ञान कराने के लिये घर का त्याग करने में कोई विघ्न न आये । इसी लिये वह सर्व प्रथम विघ्न हर्ता गणेशजी का स्मरण मानव मात्र को अनुकरन करने के लिये किये है । वह शतानंदमुनि सत्संगिजीवन शास्त्र प्रकरण १ के अध्याय-४२ श्लोक ३ से ११ तक वर्णित है । ये स्त्रोत गणेशजी की प्रार्थना संस्कृत शब्दो का अर्थ जाने ।

विघ्नेश विघ्नचयखण्डननाधेयं श्रीशंकरात्मज सुराधिपवन्द्यपाद।
दुर्गामहाव्रतफलाखिलमंगलात्मन्
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥१॥

हे विघ्नो के नियन्ता ईश्वर गणेशजी मनुष्य के जीवन में आने वाले सभी विघ्नो के समूह का नाश करे । तो आपके मंगलकारी नाम के प्रताप और उसकी महिमा है । इस कारण से बड़े से बडे देव ईन्द्र इत्यादि आप के चरण कमल की वंदना करते है । माता पार्वती के महान तपस्या के फल स्वरुप प्रगट होकर सबका मंगल करते है । ऐसे समस्त सिद्धियो के नियामक हमारे जीवन में आने वाले सभी विघ्नो को आप दूर करे ।(१)

सत्यब्जरागमणिवर्णशरीरकान्ति
श्रीसिद्धिबुद्धिपरिचर्चितकुंकुमश्रीः ।
दक्षस्तनेवलयितातिमनोज्ञ शुण्डो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥२॥

श्रेष्ठ कमल अर्थात् ब्रह्म कमल के पुष्प के समान दिव्य मणी अर्थात् स्वच्छ मूल्यवान हीरा हो, उसे बगल में रख दे । इस प्रकार की कांतिवाला शरीर का रंग है । और उसके उपर आप की सुंदर गुणवान सिद्धि-बुद्धि नाम की गुणवान पत्नियाँ चारो तरफ से कुंकुम का लेप लगाये है । इससे उनकी शोभा, अवर्णनीय बन जाती है । इसी शोभा के साथ आप की लम्बी सूढ आप के दाहिने छाती पर मुडी है । जो दर्शन करने वाले मन को आमंत्रित करता है । ऐसे समस्त सिद्धियो के नियामक हमारे जीवन में आने वाले सभी विघ्नो को दूर करते ।(२)

पाशांकुंशाब्जपरशूंश्च दधच्चतुर्भिर्दोर्भि-
श्चशोणकुसुमस्त्रगुमांग जातः ।
सिन्दुरशोभितललाटविधुप्रकाशो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥३॥

अपने भक्तो की रक्षा करने के लिये और । दुष्टो को दंड देने के लिये चारो हाथो में क्रमशः पाश, अंकुश, कमल और फरसा धारण किये है । आप का अतिप्रिय लाल फूल की माला धारण किये है । जो आप माता पार्वतीजी के अंग से प्रगट होकर । आभूषण के रुप में चंद्र और ललाट पर सिंदूर धारण किये है । ऐसे समस्त सिद्धियो के नियामक हमारे जीवन में आने वाले सभी विघ्नो को दूर करें ।(३)

कार्येषुविघ्नचयभितविरंचिमुख्यैः
सम्पूजितः सुरवरैरपि मोदकाद्यैः ।
सर्वेषु च प्रथममेव सुरेषु पूज्यो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥४॥

अपने कार्यो में आने वाले विघ्नो के भय को देखकर ब्रह्मा आदि देव आप के प्रिय मोदक से पूजा करते है । आप सभी देवो में प्रथम पूजनीय है । ऐसे समस्त सिद्धियो के नियामक हमारे जीवन में आने वाले सभी विघ्नो की दूर करे । (४)

शीघ्रांचनस्खलनचुंचुंरवोर्ध्वकण्ठ-
स्थूलोन्दुरूद्रवणासितदेवसंघः ।
शूर्पश्रुतिश्चपृथुवर्तुलतुंगतुन्दो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥५॥

भक्तो के विघ्न को दूर करने के लिये जल्दबाजी से चलने की आदत से अपने वाहन मूसकराज से गिर जाते है । तथा पुनः उसको चलने की प्रेरणा देते है । उससे देवता खुश हो जाते है । क्योंकि आप के सूप के समान बडे कान और विशाल देह देखकर सबको हसना आता है । हे समस्त सिद्धियो के नियामक हमारे जीवन में आने वाले सभी विघ्नो की दूर करे ।(५)

यज्ञोपवितजलम्भितनागराजो
मासादिपुण्यदद्दशीकृतऋक्षराजः ।
भक्ताभयप्रद दयालय विघ्नराजो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥६॥

पवित्र यज्ञोपवीत की जगह पर आप ने साक्षात् नाग धारण किये हुए है । भाद्रपक्ष सुद-४ चतुर्थी तिथि को प्रथम कही जाती है । उस दिन जो चन्द्र का दर्शन करता है । उसका मंगल करते है । निर्भय बना देते है । दया के सागर है । सभी विघ्नो के राजा है । ऐसे समस्त सिद्धियो के नियामक मेरे जीवन में आने वाले सभी विग्नो को आप दूर करे ।(६)

सद्रवसारततिराज सत्किरीटः
कौसुम्भचारुवसनद्वय उर्जितश्रीः ।
सर्वत्रमंगलकरस्मरणप्तापो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥७॥

आप के मस्तक पर उत्तम प्रकार के रत्नो से अलंकृत मुकुट धारण किये है । अतिशय शोभायमान कसुंम्बी के रंग वाला परिधान धारण किये हुए है । आप का स्मरण सर्वत्र मंगलकारी है । ऐसा आप का महानप्रताप है । ऐसे सम्पूर्ण सिद्धियो के नियंता हमारे जीवन में आने वाले सभी विघ्नो को आप दूर करें ।(७)

देवान्तकाद्यसुरभीतसुरार्तिहर्ता
विज्ञानबोधनवरेण तमोपहर्ता ।
आनन्दितत्रिभुनेश कुमारबन्धो
विघ्नंममापहरसिद्धिविनायक त्वम् ॥८॥

बडे-बडे असुरो आदि के भय से देवताओ को निर्भय करने वाले है । आप के शरण में आये सभी राजा या रंक के अज्ञान रुपी अंधकार को नाश करके त्रिभुवन पति, ब्रह्मादि को आनन्द देते है । और कुमार कार्तिकेय के आप भाई है । ऐसे समस्त सिद्धियो के नियंता हमारे जीवन में आने वाले समस्त विघ्नो को आप दूर करे ।(८)

भेडियाबेट में हनुमानजी महाराज का प्रतिष्ठोत्सव

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अहमदाबाद)

१९७३ में हुए भारत पाकिस्तान के युद्ध को इतिहास के स्वर्ण अक्षरो में लिखा जायेगा । क्योंकि उसमें भारत के जाबाज शूरवीर सैनिको ने पाकिस्तान को बुरी तरह से पराजित किये थे । उनके कई स्थानो पर अपना ध्वज फहरा दिये थे । हजारो सैनिको ने प्राण की आहुति भी प्रदान किये । तथा भारत के ध्वजा को ऊँचा किये । दुश्मन देश के हजारो किलो मीटर का क्षेत्र सैनिको ने भारत के कब्जे में ले लिया था । इसके बाद हिन्दू संस्कृति के अनुसार दुश्मन को माफ करके मानवीय मूल्यो की ईज्जत करते हुए । सेनापतियो ने जीते हुए क्षेत्र को वापस कर दिया । और अपने शूरवीरो को अपनी मातृभूमि पर आने का आदेश दे दिये ।

कई सैनिक भारत में अपने शस्त्र वाहन, साजो सामान सहित भारत की सीमा में आ रहे थे । तभी जत-तलाई चौकी के पास बार-बार आवाज आ रही थी । कि ''मुझे भी साथ ले जाओ...... मुझे भी साथ ले जाओ'' सैनिक इस आवाज को बार-बार सुन रहे थे । इस कारण से चारो तरफ देखे । लेकिन युद्ध के माहौल मे वहाँ पर कोई नही उपस्थित था । लेकिन वहाँ पर हनुमानजी का छोटा चबूतरा था । सैनिको को तत्काल आभास हुआ कि यह आवाज इसी मूर्ति की है । वे लोग इस मूर्ति को प्रेम से ले लिये । तथा आकाशवाणी भी बंद हो गयी । सेना के शूरवीर, सेनापति, अधिकारी यह दृश्य देखकर अवाक हो गये । वह चमत्कारी मूर्ति भारत की सीमा में लाये । सीमा पर तीन से चार किलो मीटर के बाद विश्राम करने के लिये सैनिक बैठ गये । वहाँ पर एक किनारे मूर्ति भी रख दिये ।

यह विराम स्थल अर्थात कच्छ की सीमा पर आये भेडियाबेट का स्थल है । थोडे समय के बाद सैनिक आगे बढने को तत्पर हुए । तथा साथ में लायी गई मूर्ति को याद करके साथ लाना चाहे । लेकिन हनुमानजी महाराजने यहाँ पर चमत्कार दिखाये । छोटी सी पत्थर की मूर्ति जरा भी खिसकी नही थी । अभी शूरवीरो ने सफल युद्ध करके आये थे । फिर भी मूर्ति १ इंच आगे नही खिसका सके थे । पूरे सैनिक विस्मय में आ गये । जिस प्रकार रावण के दरबार में अंगद का पैर कोई हिला नही सका । उसी प्रकार हनुमानजी की यह प्रतिमा भी स्थिर हो गयी । सेनापति समझ गये कि यह मूर्ति नही यह साक्षात् हनुमानजी महाराजजी की आज्ञा है । इस कारण से सभी सैनिक तत्काल में वहाँ पर पतरा के द्वारा शेड बनाकर हनुमानजी की मूर्ति को सुरक्षित कर दिये । वहाँ कच्छ के रण में कुछ था नहीं, पूजा-अर्चना के लिये कुछ मिला नही । सभी सैनिक वंदना करके अपने फरज पर चले गये । हनुमानजी वहाँ पर अपनी जगह बनाकर बिराजमान हो गये ।

यह स्थल अर्थात् कच्छ का भेडियाबेट सीमा प्रदेश है । भारत-पाक की अति संवेदनशील सीमा है । चारो तरफ विरान मरुस्थल है । मात्र रेत ही रेत दिखाई देती है । आने-जाने के लिये कोई रास्ताभी नही है । एक गिलास पानी भी नही मिलता है । भूज से अर्थात् १००

की.मी. दूर से टेंकर के द्वारा पानी जाता है। ऐसी जगह पर हमारे देश के जवान दिन-रात हमारी रक्षा हेतु शस्त्र धारण करके सीमा पर प्रहरी का कार्य करते है. जब इन जवानो को कोई समस्या आती है तब ये लोग हनुमानजी से विनती करते है। मान्यता रखने पर अवश्य समस्या निवारण हो जाता है। उसके परिणाम स्वरुप जवान एक घंटी वहाँ रख देते है। इसके प्रमाण मे आज वहाँ पर सैंकडो घंटिया पडी है। कुछ समय पूर्व प.पू.ध.धु. निवृत आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री बड़े महाराजश्री भुज में दर्शन हेतु पधारे थे। उसी समय महंत स्वामीश्री तथा ट्रस्टी लोग कहे कि महाराज को इस बात का संज्ञान कराये। बड़े महाराजश्री तुरंत उस स्थल पर जाने की इच्छा व्यक्त किये। मिलिटरी और सरकारश्री का आदेश प्राप्त करके वे संत मंडल के साथ विकट स्थान पर पधारे।और अपने दादाश्री धर्मदेव के वचन सुनाये थे।

दुःख पडे दोय दंयती तमे समीर सुत संभारजयो।
कुलदेव से आयषा, करशे संकटमां सारजयो ॥
(भ.चि.प्र.-१२, कडी-४)

और चिरंजीवी हनुमानजी महाराजने धर्मदेव के दिये गये वचन को अति गद्‌गद् होकर विनम्रता से हृदय में धारण किये।

आवी स्वपनमांहि कह्यु एम रे,
मने संभार्यो नहि तमे केम रे।
हवे दुःख तमारुं दंपती रे,
नहि रहेवा दयुं एक रति रे ॥
(भ.चि.प्र.-१४, कडी-६)

साक्षात हनुमानजी महाराजने बडे महाराज के हृद यमें प्रेरणा किये। और सहसा बोले कि ''हमे यहाँ हनुमानजी महाराज का एक सुंदर साधन वाला मंदिर बनाना है'' धर्मवंशी आचार्यश्री की आज्ञा में कार्य करने वाले भूज मंदिर के महंतश्री अन्य संत, पार्षद एवम् ट्रस्टीश्री इस वचन को सिर पर ले लिये। तथा आज्ञानुसार कार्य प्रारम्भ कर दिये।

भूज से ११० किमी दूर आने-जाने का मार्ग नही, केवल मरुस्थल में सेंकडो किमी जाने, भोजन-पानी की व्यवस्था नही, संवेदनशील सीमा प्रदेश, सुरक्षा की दृष्टिकोण से आदमी को आने जाने का आदेश नही है। फोटोग्राफी के उपर पूर्ण प्रतिबंधहै। इन सभी समस्या के कारण मंदिर बनाना कठिन कार्य था। लेकिन बडे महाराजश्री के संकल्प मूर्तिमान होता है। उसमें पवित्र संतो का आशीर्वाद मिला होता है। उसी कारण ता. ६-५-२०१८ के दिन बड़े महाराजश्री के करकमलो द्वारा तत्कालीन मुख्यमंत्रीश्री विजयभाई रुपाणी अनेक पदाधिकारी, बहादूर सैनिक, संतो हरिभक्तो की उपस्थिति में मंदिर का खात मुहूर्त किया गया।

संतो, ट्रस्टीयो, हरिभक्तो के अथक प्रयास मात्र से दो वर्ष के संक्षिप्त काल में नयनरम्य सुंदर मंदिर की रचना पूर्ण हुई। साथ में बड़ा हाल पानी की टंकी, दो कमरे, चबूतरा का निर्माण किया गाय। जंगल में मंगल सर्जित किया गया। सेना के जवान मंदिर निर्मित देखककर हर्षित हुए। आज की भौगोलिक कारण देखकर सम्भव नहीं लगता था। कार्य कम समय में पूर्ण हो गया। उसका मुख्य कारण हनुमानजी की चमत्कारिक मूर्ति, बड़े महाराजश्री का दृढ संकल्प, भूज मंदिर के महंतश्री और पवित्र संतो के आशीर्वाद और धर्मप्रेमी अनुभवी ट्रस्टीयो की दीर्धदृष्टि पूर्वक प्रबन्धमुख्य कारण है।

सम्प्रदाय की विधिअनुसार शिक्षापत्री श्लोक ६२ के अनुसंधान को रखकर सभी संत मंडल और ट्रस्टीयोने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने इस नये मंदिर में हनुमानजी महाराजजी के चमत्कारिक मूर्ति की विधिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करने का विनय किये। और ता. १०-१०-२०१९ के दिन प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव करना निश्चित किये। अहमदावाद से बड़े महाराजश्री संतो के साथ आये थे। भूज मंदिर से स.गु. श्री महंत स्वामी दो सौ संतो, महंतो, पार्षद, ट्रस्टीयो के साथ पधारे थे। हरिभक्तो को आने के लिये मंदिर प्रबन्धन ने योग्य प्रबन्धकिये थे। भारतीय सेना के सैनिक, सेनापति की उपस्थिति में नये मंदिर में यज्ञ किया गया। वेद मंत्रो का गायन हुआ। शास्त्रोक्त विधिसे प.पू.ध.धु.श्री आचार्य महाराजश्री श्री हनुमानजी महाराजश्री की प्रतिष्ठा किये। कष्टभंजन देव और नरनारायणदेव का जयघोष चारो तरफ फैल गया। प्रतिष्ठा के बाद सुंदर आरती सुमधुर स्वर में की गयी। कष्टभंजनदेव की स्तुति आराधना की गई। तथा सभी को प्रसाद वितरित किया गया था।

संत हरिभक्तो की सभा को हमरोज संम्बोधित करते है। लेकिन आज की सभा में भारत देश के वीर जवानो की उपस्थिति है। इससे गौरव महसूस होता है। आचार्य महाराजश्री के प्रवचन में आत्मियता, निराडम्बर और सच्चाई सुनकर हृदय आनंदित हुआ। उन्होने बाताया कि पानी की समस्या निवारण हेतु अधिक प्रयास करेगे। जो लोग देश की रक्षा करते है। उनकी सहायता के लिये हम हमेशा तैयार है। स्वामिनारायण सम्प्रदाय राष्ट्रहित की भावना हृदय में रखता है। इन सैनिको के प्रति हमारा अतिशय प्रेम और श्रद्दा है। आप की रक्षा हेतु हनुमानजी महाराजश्री की प्रतिष्ठा किये है। सेना के जवानो का उत्साह प्रेम देखकर, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मनिष्ठ ऐसे प.पू. जादवजी भगतजी भी ने हिन्दी में अति सुंदर प्रवचन दिये थे।

प.पू. महाराजश्री बोले कि जब भगवान खुश होते है। तभी हमें अच्छा विचार आता है। इसीकारण मुझे भी मंदिर बनाने की प्रेरणा मिली। लेकिन श्री नरनारायणधेव की कृपा एवम् हनुमानजी महाराजश्री की प्रेरणा है। सभी की रक्षा ये हनुमानजी महाराज करे। ऐसा आशीर्वाद प्रदान किये।

भूज मंदिर के पार्षद श्री जादवजी भगतने सेना के जवानो की प्रशंसा किये। वे सभी को यथा योग्य भेट प्रदान किये। भविष्य में कोई कार्य होगा। उसे पूरा करने की सहमती प्रदान किये। सभी को हृदयपूर्वक कृतज्ञता व्यक्त किये। B.S.F. (सीमा सुरक्षा बल) के जवानो के द्वारा, सेना के उच्च अधिकारी प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, भुज मंदिर के महंत स्वामीश्री तथा पार्षद जादवजी भगत का हार-खेश देकर सन्मान किये। तथा कृतज्ञता व्यक्त करके खुश हुए। वहाँ पर रहे सभी जवानो को बताये कि यहाँ हनुमान चालिया पढना सुगम होगा। वे सभी जवानो को अनुभव कराये कि,

राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसा रे।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना,
तुम रक्षक काहु को डरना ॥

इस प्रतिष्ठा महोत्सव का मुख्य विषय यह था कि लगभग ढाई करोड रुपये खर्च से यह मंदिर बना है। यह पूरे स्नेह के साथ सेना और भारत सरकार को दे दिया गया है। इसके पूजारी सेना के जवान ही होगे। सम्प्रदाय का कोई प्रभाव नही रहेगा। सम्प्रदाय की उच्च भावना को भारत सरकार ध्यान में ली है। प्रधान मंत्रीश्री नरेन्द्र मोदीजीने प.पू. बड़े महाराजश्री को व्यक्तिगत संदेश भेजकर सम्प्रदाय के इस कार्य की

सराहना किये है। वे स्वयं अयोध्या में श्रीराम मंदिर के लिये इतना प्रयास किये है। ऐसे श्रीराम के सेवक शक्तिमान श्री हनुमानजी का मंदिर सीमा पर देखकर आनन्द अनुभव किये होगे। विशेषकर स्वामिनारायण सम्प्रदाय की लगाव देखकर अपने संदेश में धोषित किये है।

भूज मंदिर ने इस कार्य में तन, मन, धन का खूब सहयोग किया। इस मरुस्थल क्षेत्र में हजारो मानवो के लिये भोजन-पानी, आने-जाने की व्यवस्था करना ये भी कठिन कार्य है। लेकिन सभी सदस्यो का निराकरण करते हुए। यह अति कठिन कार्य सरल बना दिये।

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रगीत गाकर पूरा किया गाय। वहाँ उपस्थित सभी संत हरिभक्त भारत माता की जयघोष करके सैनिको का मनोभाव उच्च किये थे। धार्मिक उत्सव में इस तरह की राष्ट्र भावना देखने में आयी ही थी। स्वामिनारायण सम्प्रदाय के वरिष्ठ संत स.गु. श्री गोपालानंद स्वामीने सारंगपुर गाँव में हनुमान महाराजजी की स्थापना किये। जो आज भी प्रत्यक्ष है। महानुभावानंद स्वामीने भी हनुमानजी की प्रतिष्ठा किये थे। आदि आचार्यश्री अयोध्या प्रसादजी महाराजश्रीने श्री उह्मदाबाद कांकरिया में हनुमानजी की प्रतिष्ठा किये थे। आज भी सभीदेव मनोकामना पूर्ण करते है। सभी के आधिव्याधिउपाधिको दूर करते है। उसी रास्ते पर चलकर आज कच्छ सीमा पर भेडियाबेट हनुमानजी की प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने किया। वे सभी हरिभक्तो, जवानो तथा भारतीय सीमा की रक्षा अवश्य करेगे। अनुकूलता होने पर दर्शन अवश्य करे।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सदस्यो को सूचना

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सदस्यो से नम्र निवेदन है कि वे अपनी सदस्यता क्रमांक नाम और मोबाईल नम्बर अवश्य शीघ्रताशिघ्र भेज दे। यह अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव मंदिर, स्वामिनारायण मासिक कार्यालय में भेज दे।

मंदिर के क्रिया कलाप, मासिक की सूचना। शिकायत इत्यादि आपश्री के मोबाईल नंबर पर प्राप्त हो जायेगी।

निम्नलिखित मंदिर के मोबाईल नंबर के उपर आपश्रीमान SMS अथवा Whatsapp के उपर आप सूचना दे सकते है।

मोबाईल नं. : 9099098969

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यो का विवरण

सदस्यता क्रमांक ....

सदस्य का नाम : ....

मोबाईल नं. : १. .... २. ....

ग्राम/शहरका नाम ....

ता. .... जि. ....

गाना बंद करे

– चंद्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

गढपुर में एक दिन घेला धांधल श्रीजी महाराज के पास आये । महाराज के पैर लगकर बोले की हमारे घर पर हमने ज्वार भरने का बखार तैयार किया है । आप आकर उसका उद्‌घाटन करिये । महाराज वहाँ गये । सूर्यास्त के समय चबूतरे पर बैठ गये । नित्यानंद स्वामी कथा करने बैठ गये । इतने में रामप्रतापभाई वहाँ पर आये । महाराज को दूर से प्रणाम करके वह चले गये । महाराज को लगा कि बड़े भाई कही बाहर गाँव जा रहे है । ऐसा लग रहा है । किसी सेवक को पता करने के लिये भेजे । तो वह आकर बोला भाई तो देहा खाचर की गाडी लेकर उसमें बैठकर उगामेडी के रास्ते पर गये है । महाराज तत्काल दरबार में आये । लाडुबा जीवुबा और दादा खाचर से पूछे । रामप्रतापभाई कहा गये है ? तीनो लोग बोले ज्ञात नही है । महाराजजी अक्षर के घर पर बैठ तभी रघुवीरजी आ गये । वडे भाई कहाँ गये ? आप को ज्ञात है ? उन्होने ना का उत्तर दिया । महाराज बोले कि हमने देश का बँटवारा किये है उन्हे अहमदाबाद देश मिला है । ऐसा तो उन्हे नही लगा कि उन्हे कम प्राप्त हुआ है । और रघुवीर को अधिक मिल गया हो । इससे नाराज हो गये हो । आप कहे तो आधा भाग गढडा में से उन्हे दे दे । रघुवीरजी बोले ठीक है महाराजजी । आप उन्हे दे दे । रघुवीरजी के उत्तर से महाराजजी खुश होगे ये । दादा खाचर को बुला कर बोले कि रामप्रतापको वापस बुलाने के लिये जाता है । आप तैयार हो जाओ । इस प्रकार महाराज और दादा खाचर पार्षद लोगो के साथ जाने लगे । किसी सेवक से समाचार दिये कि मुक्तानंद से कहना हम लोग राधावाव में रुकेगे । वहाँ गाडी लेकर आये । स्वामी गाडी लेकर महाराज के पास आये । सभी लोग उगामेडी गये । गाँव के किनारे खडे होकर एक सेवक को सुचना लेने के लिये गाँव में भेजे । आकर बोला भाई तो भोजन बना रहेहै ।

श्रीहरि बोले यहाँ थोडे समय तक बैठते है । शायद भाई यहाँ से जाये । इतने में भाई चलते-चलते निकल रहे थे ।

स्वामीने तुरंत उन्हे गाडी में बैठाकर दादा खाचर के दरबार में ले गये । पीछे से श्रीजी महाराज, दादा खाचर भी आ गये । महाराज मुक्तानंद स्वामी ने पूछा गाडी में बैठकर आपने भाई से पूछा नही कि क्यो क्रोधित हो गये है ? स्वामीजी बोले भाई की गुस्से वाली प्रकृति देखकर पूछने का मन नहीं हुआ ।

दूसरे दिन सूर्योदय के समय सत गमन करने आये थे । प्रेमानंद स्वामी महाराज अंगुली करके बुलाये और बोले कि रामप्रतापभाई कल गुस्से होकर क्यो चले गये । यह पूछना । प्रेमानंद बड़े भाई के सामने सरोद लेकर गाने लगे । भाईभी गाने में साथ देते थे । गाने के बाद प्रेमानंद स्वामी के उपर भाई खुश हुए । और बोले बहुत अच्छा गाते है ।

भाई को खुश देखकर प्रेमानंद स्वामी बोले, आप से एक प्रश्न पूछो भाई बोले पूछो पूछो ! स्वामी बोले, कल आप क्यो गुस्से में आ गये थे । और यहाँ से चले गये ? भाई बोले कल रात को हम गा रहे थे । तभी देव और वीर हमे बोल कर गये कि गाना बंद करिये । महाराज को नींद नही आ रही है । यह सुनकर हमें अच्छा नही लगा इस लिये वहाँ से चल दिये थे । प्रेमानंद स्वामी आकर के महाराज से ये बात बताये थे । महाराज हँसकर बोले यह सोच से बाहर की बात निकली । खुद को कम हिस्सा मिला यह उनके मन में नही था ।

तुरंत महाराजजी रामप्रतापभाई के पास गये । और बोले हमने कब आप को गाने से मना किये थे । भाई कहते है कि देव और वीर आकर गाना बंद कराये थे । कि महाराज को नींद नही आ रही है । महाराज बोले देव और वीर को बुलाकर निश्चित कर ले ।

दोनो भाई आये, तब महाराज बोले, हमने कब आप को बड़े भाई के पास गाना बंद करवाने के लिये भेजा था । दोनो भाई महाराज से माफी माँगे कि हम सुबह से शामं तक कठोर श्रम करते है । रात में सोते समय भजन शुरु करते है । इस से हमारी नींद टूट जाती है । इस लिये आप का नाम लेकर गाना बंद करने के लिये कहा था ।

देखो बडे भाई ! महाराज बोले इसमें हमारा कोई दोष है । बड़े भाई देव और वीर के उपर क्रोधित हुए । श्रीहरि से कहते है कि इस गाँव में या देव-वीर रहेगे या मैं, बड़े भाई आप निर्णय करले । बडे भाई ! महाराज बोले, आप तो हमारे साथ रहेगे । देव-वीर चले जायेगे । देव-वीर की तरफ देखकर बोले तुम दोनो गढपुर की सीमा से बाहर चले जाओ । मांडवधार में ही रहना ।

दो-तीन दिन बाद रामप्रतापभाई प्रातः नदी में स्नान कर रहे थे । तभी कोई आदमी को अशुद्ध क्रिया करते देखे । एसा विचार आया कि देव और वीर भी कुसंग से विगड जायेगे । हमारे प्रति खराब विचार आता होगा । इसी तरह अशुद्ध क्रिया कर रहा होगा । कारण तो हम बने ! अधिक खराब बात है ।

स्नान करके दरबार में सीधे महाराज के पास गये । भैया ! देव और वीर को वापस बुलाये । महाराज बोले बडे भाई ! वे गये तो चले गये । कहाँ गये हमे ज्ञात नही ! भाई बोले कुछ भी करे । अपने सेवको को चारो तरफ भेजे । आने के बाद ही भोजन करेगे । एक पार्षद मांडवधार जाकर बुलाकर ले आया । रामप्रतापभाई दोनो का आलिंगन करके खुश हुए । देव-वीर को कटु कहने के लिये क्षमा माँगे । तथा भाई के नाम पर गलत बोलने के लिये माफी माँगे ।

उसी दिन देव-वीर ने ब्राह्मण को भोजन कराके, महाराज तथा बडे भाई को भी भोजन कराये थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा आयोजित समग्र अहमदाबाद देश का बाल मंडल शिबिर

समस्त सत्संग को सहर्ष अवगत कराया जा रहा है कि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा आयोजित समग्र अहमदाबाद देश के बाल मंडल शिबिर का भव्य आयोजन किया जा रहा है । जिस में लिखे गये उम्र के आप के बच्चो और बच्चियों को शिबिर में भाग लेने के लिए प्रत्येक संरक्षक से नम्र निवेदन है ।

: समय :
ता. १९-०१-२०२०
रविवार
प्रातः ९ से ५
उम्र की सीमा १० से २० वर्ष
(लडके-लडकियाँ)

: स्थान :
श्री नरनारायणदेव नगर
पारसनगर, भूयंगदेव रोड
पेट्रोल पंप के पीछे, घाटलोडीया
अहमदाबाद
संपर्क : ९६६२०४०५६२
९४२९०६७५८७

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अक्षरधाम के अधिपति ने हम सभी जीवो के कल्याण हेतु मानव शरीर धारण किये और मानवदेह के ही धर्म का आजीवन पालन किये । ठंडी गर्मी और वर्षा का साधारण जीव की तरह सहन किये । मागशर-पौष महिने की तीव्र ठंडी में प्रातः स्नान करके कई बार कथा वार्ता किये ।

एकबार कडक ठंडक के समय श्रीजी के शरीर को ताप देने के लिये संतो ने अलाव (सगडी) का प्रबन्धकिये थे। तभी एक हरिभक्त ने श्रीजी से प्रश्न किया कि हे महाराज ! अक्षरधाम में श्रीहरि अभी क्या कर रहे होगे ? श्रीहरि बोले कि, भगत ! वहाँ भी श्रीजी अलाव ताप रहे है ? भगत को लगा कि धाम में ताव तो होगा नहि - सहज भ्रमित हो गये । श्रीहरि समझ गये । उसे समाधिकराके अक्षरधाम में भेजे थे । श्रीहरि जब वहाँ अलाव ताप रहे है तो भगत खुश होकर गद्‌गद् होकर स्तुति करने लगे । यह निश्चय किये कि श्रीहरि का मानव शरीर और अक्षरधाम का नित्य स्वरुप दोनो में कुछ अंतर नही है ।

ऐसे सामान्य सगडी का दर्शन अपने स्वामिनारायण म्यूजियम में है । यह अपनी बडी भाग्य है । जो सगडी हरिभक्तने अक्षरधाम में देखा था । उसी का दर्शन यहाँ पर होता है । इससे बड़ी कोई दूसरी बात नही है । अपने नजरो से माया दृष्टि हटाकर दिव्य भाव से दर्शन करे । तो इसका आभास होगा ।

स्वामिनारायण म्यूजियम को प्रत्येक वस्तु श्रीहरि से साक्षात् सम्बन्धवाली है । यहाँ के कण-कण में परमात्मा की अनुभुति मिलती है । प.पू. बड़े महाराजश्री के तप त्याग के प्रभाव से मन में अपार शांति मिलती है ।

हरिभक्तो, यह महाप्रसादी की सगडी का दर्शन अवश्य करे । अक्षरधाम की वस्तु का दर्शन आँखो से बार-बार नही मिलता है ।

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि-दिसम्बर-१९

दि. ०१-१२-२०१९	अ.नि. भाईलालभाई ईश्वरभाई कोठारी हा. किर्तिभाई तथा अल्केशभाई कोठारी - पालडी ११ बजे नीरज पीयुषकुमार जोशी - यु.एस.ए.।
दि. ०८-१२-२०१९	जशीबेन अरविंदभाई पटेल वडूवाला - यु.एस.ए.।
दि. ०९-१२-२०१९	पूजा समीर - पालडी।
दि. १८-१२-२०१९	वर्षा (भूमि) गोविंदभाई पटेल - चडासणावाले - हा. केनैडा।
दि. २९-१२-२०१९	यामिनी मिहीर ठक्कर - सिडनी (ओस्ट्रेलीया) ११ बजे अंकित विनोदचंद्र पटेल - कपडवंजवाले - हा. लंडन
दि. ३१-१२-२०१९	मलय जयेन्द्रभाई आत्माराम पटेल - डांगरवावाला - हा. यु.एस.ए. प्रेरणा : शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम का ९ वाँ वार्षिक स्थापना दिवस (फाल्गुन सुद-३ श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव) ता. २६-०२-2020 बुधवार के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया । समूह महापूजा में सपत्नी बैठने का लाभ `लने के लिये श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के कार्यालय में सम्पर्क करे ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-दिसम्बर-१९

रु। १२५,०००/-	अश्विनभाई मगनभाई जागाणी - सेटेलाईट - चि. चार्वीना के विवाह हेतु - ह. मगनभाई जागाणी।
रु। १८,०००/-	एन. एच. प्रधानानी - मुंबई प्रतिमास रु। १५००/- म्यूजियम के खर्च हेतु
रु। १२,०००/-	जगदीशभाई कालीदास दरजी - बोपल प्रतिमास रु। १५००/- म्यूजियम के खर्च हेतु
रु। ११,०००/-	पटेल मगनभाई - डांगरवा
रु। ११,०००/-	पटेल अरविंदभाई त्रिकमलाल करजीसणवाला - नया नरोडा म्यूजियम में अभिषेक संकल्प हेतु
रु। ५,०००/-	मीनाबेन के. जोशी - बोपल

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रात: ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

नाम रुपी नाव

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

भगवत नाम का स्मरण अद्‌भूत और चमत्कारी है । उसमें भी कलियुग में भगवान के नाम स्मरण भवसागर पार करने के लिये नाव समान है।

शास्त्रो में भी कहा गया है कि –

कृते यत् ध्याय तो विष्णु, त्रेतायाम यजतो मखै ।
द्वापरे परिचर्यायाम्, कलौ केशव किर्तनात ॥

अर्थात् सतयुग में ध्यान धारण करके वर्षो तक साधना करने पर भगवान मिले की न मिले इतना कठिन है । त्रेतायुग में अगणित यज्ञ करने पर भी तब भी भगवान खुश हो या नही । यह स्थिति होती है । द्वापर युग में सेवा करने से भगवान को प्राप्त करने का साधन है । लेकिन कलियुग में भगवान सामान्य भाक्ति से मिल जाते है । नाम स्मरण अथवा संकीर्तन द्वारा सहज भाव से भगवान सुलभ हो जाते है । भगवान के नाम का स्मरण का प्रताप भयंकर बालिया लुटेरे को वाल्मिकी ऋषि बना दिया । जो काम ज्ञानी नही कर सके है । ऐसा काम भी भगवान के नियमित नाम स्मरण से सरल बन जाता है । गोस्वामी तुलसीदास महाराजजी भी भगवान के नाम स्मरण की शक्ति का वर्णन किये है।

''नहि कलि कलम न भगति बिवेकु, रामनाम अवलम्बन ऐकु''

यदि एक निष्ठा से भगवान के नाम का स्मरण करे तो कैसे काम बन जाता है यह बात उपर लिखित साक्ष्य से प्रमाणित है।

एक सुंदर स्वच्छ गाँव था । उस गाँव में एक राम मंदिर में वहाँ के भक्त एकत्र होकर भगावन के कथा की सुंदर व्यवस्था किये थे । कथा वाचक पंडितजी आये । और कथा प्रारम्भ किये । इस गाँव के बगल में नदी के सामने एक दूसरा गाँव था । वहाँ से प्रतिदिन एक ग्वालिन नाव के द्वारा नदी पार करके इस गाँव में दूधबेचती थी । यह बहन का प्रतिदिन का कार्य था ।

नियमानुसार वह गाँव में आयी । उस समय कथा-वार्ता हो रही थी । पंडितजी कथा सुना रहे थे । सहज प्रेम आने पर वह ग्वालिन कथा सुनने बैठ गई । कथा में पंडितजी भक्ति भाव पूर्वक कथा करते बोले कि भगवान के नाम स्मरण से भवजलतर जाते है । यह बात बहन के हृदय में बस गई । इस बहनने विचार किया कि यदि रामनाम लेने से भवपार हो जाते है । यदि वे इतने तारक है तो मुझे प्रतिदिन नाव वाले को पैसा देकर आना पडता है ।

बहन भगवान का पूर्ण श्रद्धा के साथ नाम लेकर नदी में चलना शुरु कर दिया । चमत्कार ''आश्चर्यम्'' यह बहन चलते-चलते नदी पार कर गयी ।

अब तो हर समय, गृहकार्य के समय लगातार प्रभु का नाम रटने लगे । कुछ समय के बाद पैसा भी बचने लगा । भक्ति का प्रताप ऐसा कि दूधपहले से अधिक बिकने लगा था । भक्ति के द्वारा मन में सद्‌विचार आया कि ब्राह्मण को भोजन कराये । पंडितजी को आमंत्रण दिये थी ।

पंडितजी को नाव में बैठाकर यह बहन-चलते ही नदी पार कर गयी । पंडितजी आश्चर्य से देखने लगे । यह क्या ! पंडितजी को घर ले आकर खिलाई और दक्षिणा प्रदान किये ।

पंडितजी को भ्रम होने लगा । यह कैसा !! नाव बगैर नदी पार हो जाना यह बड़ा चमत्कार है । पंडितजी को इस चमत्कार का रहस्य समझ में आया कि भगवान की कथा श्रद्धा से सुनने पर ऐसा फल मिल जाता है । जैसे बहन नदी पार कर जाती है । वैसे ही भवसागर भी

पार हो जाते होगे।

बालमित्रो ! बात तो आश्चर्यजनक लगेगी। लेकिन यह समझे भगवान का नाम स्मरण से जीभ में शक्ति आती है। और एक अलौकिक आनंदकी प्राप्ति जीव प्राप्त करता है। नाम स्मरण के लिये आसन लगाना आवश्यक नही है। खाते-पीते, धुमते, घर में कार्य करते समय, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण रटते रहे आठो जाम'' संतो ने भी नाम स्मरण की महिमा कहे है।

वैराग्य मूर्ति निष्कुलानंद स्वामी भी भगवान के नाम स्मरण का वर्णन किये है।

"पार उतार्या परिश्रम विना,
बेसी नाम रुपी नाव,
जे जने जप्या जीभ थी
ते तरी गया भव दरियाव."

इस लिये जिसको अपना कल्याण करना हो वे भगवान स्मरण अखंड करे। यह सर्व सुलभ सीधा मार्ग है। जिससे भवसागर पार कर सकते है।

●

समस्यायें कम नही होती

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

क्यो मंदिर नियमित नही आ रहे है ? क्यां करे, बहुत काम है, क्रिया-कलाप के कारण समय नही मिलता है। तो आत्मा के कल्याण हेतु भगवान की भजन-सत्संग कब होगा ? सभी जिम्मेदारियाँ पूर्ण होने पर शांत से भगवत भजन करुँगा।

प्रिय भाई इस प्रकार तो कभी भी क्रिया-कलार का अंत नही आयेगा। ये जीवन के अंत तक कम नही होगा। आप के साथ बात करते-करते एक प्रकरण याद आ गया है। पढिये और विचार करिये कि भक्ति भजन कब प्रारम्भ करेगे ?

एक शहर में बहुत धनिक सेठ निवास करते थे। वे कुशल व्यापारी थे। पूरे देश में उनकी ख्याती फैली थी। व्यापारी के साथ दानवीर में भी उनका उत्तम नाम था। सामान्य प्रजा के साथ बड़े-बड़े शासक भी प्रशंसा करते थे। यह वह समय था। जब माल सामान को ले जाने के लिये साधन में काफिला जाता था।

इस सेठ का सम्पूर्ण काफिला देश के अनेक राज्य में धुमता था। उसके पास समस्त देश की जानकारी होती थी। एकबार उनका समाचार प्राप्त हुआ कि उनके राजा मित्र के राज में अकाल पड़ा हुआ है। प्रजा परेशान है। यह समाचार प्राप्त होते ही राजा की सहायता के लिये सेठ ने काफिला तैयार किया। उस में पूर्ण अनाज तथा जीवन जरुरी वस्तुए व्यवस्थित करके आदमियो को बुलाकर आदेश दिये। आप लोग जल्दी से यह काफिला लेकर राज्य में पहुंचे। परेशानी यह थी कि सीमा प्रदेश के दुश्मन राज्य में से जाना था। तो उन्होने स्पष्ट सूचना दे रखा था कि रास्ते में कही सोना नही है। जब सभी पौढे बैठ जाय तभी आपको आराम करना है। आदेश, अर्थात् आदेश, जिम्मेदार व्यक्ति काफिले के साथ चलने लगे। एक दिन, दो दिन, तीन दिन पूरे दिन चलना रात्रि में विश्राम नही करते थे। सभी व्यक्ति थक गये थे। लेकिन सेठ का आदेश का पालन करे तो लाभ न करे तो हानि होने का भय था।

भगवान की मर्जी से चौथे दिन सभी पोटे बैठ गये। लगभग ९९ पोठे (खच्चर) बैठ गये थे। एक पोढाजो चोटिल था वह केवल नही बैठा था। सभी लोग विचार रहे ये तीन दिन लगातार चलने से थकान नींद तो आ ही गयी है। यदि इस पोठे को बैठा दे दो अच्छा लाभ मिल जायेगा। पोठ नही बैठा इस लिये सभी क्रोधित हो गये थे। गुस्से में पोठे को लोग धक्का मार दिये। चोटिल वाले भाग की तरफ पोठ सामान सहित जमीन पर गिर गया। पोट की आवाज से ९९ पोठ उठ गये। अब क्या ?

यह बात इस लिये कहना पड रहा है कि कई लोग ऐसा कहते है कि जिम्मेदारी पूर्ण होने पर शांति से भजन-पूजा करेगे। लेकिन वास्तव में समस्या में तो ऐसी है कि इस पोठ की काफिले की तरह एक पूरा होने पर ९९ समस्याये आकर खडी हो जाती है।

(पेईज नं. २१)

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) वचनामृत उत्सव के सभा पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "वचनामृत अभ्यासी बनकर उसी आधार पर जीवन जीन का प्रयास करे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

वचनामृत अर्थात् महाराज की प्रत्यक्ष वाणी जिसे ''परावाणी'' भी कहते है । वचनामृत के समान कोई शास्त्र नहीं हो सकता । मोक्ष के मार्ग की तरफ ले जाने वाला इस संसार में जो कोई भी धार्मिक शास्त्र है । उन सभी शास्त्रो का ''सार'' वचनामृतमें आ जाता है । इस कारण से ''वचनामृत सर्वोपरि ग्रन्थ है ।'' वचनामृत में सामान्य प्रश्न भी है । तत्व ज्ञान सम्बन्धी कठिन प्रश्न भी है । आत्मा परमात्मा का ज्ञान भी आ जाता है । आध्यात्म से जुडा कोई प्रश्न जानना हो तो वचनामृत में से जान सकते है । वेदो की जो रचना हुई है । उनको ऋषियो ने समाधिअवस्था में सुना है । जबकि वचनामृत भगवान साक्षात् बोले है । और नंद संत साक्षात् सुने है । और तुरतं लिखे है । वही अपने को मिला है । महाराज के समय में महाराज जहाँ-जहाँ जाते थे । वहाँ पर भक्तो को उपदेश देते थे । तथा उनके साथ वाले संत तुरंत लिख लेते थे । कई बार प्रश्नोत्तरी सत्संग भी किया जाता था । कई बार महारजा कृपा करके अर्न्तमन की बात भी बताते थे । यह सब बाते महाराज सबको समझाते थे । कई बार पुनरावर्तन भी हो जाता था । सभी संतो द्वारा संग्रहित वाणी थी । उसके उपर से स.गु. श्री गोपाालनंद स्वामी, स.गु. श्री मुक्तानंद स्वामी, स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी, स.गु. श्री नित्यानंद स्वामी और स.गु. श्री शुकानंद स्वामी ये पाँच बडे स्वामी मिलकर संशोधन करके २७२ वचनामृत के ग्रन्थ बनाये थे । उसमें स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी महान तत्वज्ञानी ते । और बड़े संत भी थे । स.गु. मुक्तानंद स्वामी में प्रेमलक्षी भक्ति थी । उनकी प्रेमलक्षी भक्ति समझने के लिये उनके काव्य को सुनना पडेगा और समझना पडेगा । स.गु. श्री ब्रह्मानदं स्वामी अच्छे कवि थे । और भगवान के सखा थे । और स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी का भगवान से मिलाप हुआ उसके पूर्व उन्हे राजा महाराजा शतावधानी और सहस्त्रावधारी की ''उपाधि'' दिये थे । शतावधानी अर्थात् एक सभा में अलग-अलग विषयो के ऐसे १०० विद्वान उपस्थित हो । वहाँ पर कठिन प्रश्न पूछा जाता है । तथा उसी प्रकार क्रम से उत्तर देने वाले को शतावधानी कहते है । और सहस्तावधानी अर्थात् पहले की तरह १००० विद्वान हो हर कोई प्रश्न पूछे और स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी १००० प्रश्नो का एक साथ उत्त रदे । स.गु. श्री नित्यानंद स्वामी संस्कृतभाषा के ज्ञाता थे । शीघ्रता से संस्कृत में श्लोक बना देते थे । ऐसे ज्ञानी थे । और शास्त्रो का ज्ञान भी अच्छा था । स.गु. श्री शुकानंद मुनि अर्थात् शुक मुनि जो शीघ्र भगवान के मन की ईच्छा जान लेते थे । भगवान की क्रिया को समझ जाते थे । लेकिन शुकानंद मुनि भगवान बोले कुछ क्रिया करे उससे पहले भगवान की मरजी जान लेते थे । भगवान के पास रहकर भगवान जो कहते उसे लिख लेते थे । ऐसे विद्वान मिलकर वचनामृत बनाये थे । और भगवान को दिये थे । यह शास्त्र देखकर भगवान अत्यंत खुश हुए । भगवान ने ऐसा वचन दिया कि एक वचन का भी जो पालन करेगा मैं उसे अपने धाम में स्थान दूँगा । इसके लिये भगवान की कृपा होनी चाहिए । इस कृपा को प्राप्त करने के लिये वचनामृत का वाचन प्रतिदिन करना चाहिए । वचनामृत शास्त्र को समझने के लिये प्रयत्न करना चाहिए । श्रेष्ठ भक्त बनने के लिये संसार से मन हटाना पडता है और भगवान से जोड़ना पडता है । दोनो में परिश्रम करना पडता है । भगवान से मन जोडने पर कब मन हट जाता है । यह पता नही चरता है । सिनेमा देखने पर नींद नही आती है । माला फेरते समय नींद आती है । अपना लक्ष्य निश्चित है कि भगवान के साथ जुडना है । तो विकल्प

अनपे पास है । विकल्प का चयन भी आप के पास है । और निर्णय भी स्वयं लेना है । उदाहरण स्वरुप प्रातः उठने के लिये हम घडी में एलार्म लगाते है । एलार्म के बजने पर हम उठ जाते है । या फिर सो जाते है । उसी प्रकार जीवन में भी विकल्प मिलता है । इस लिये जीवन के कठिन समय का सामाना करना चाहिए । भगवान की शिकायत नही करना चाहिए । क्योकि ? अपने मन में जो कामना होती है । उसी का विचार आता है । उसमें से चयन करके कार्य करते है । उसी तरह परिणाम मिलता है । कर्म के फलस्वरुप अच्छा परिणाम न आने पर शिकायत न करे । क्योंकि ? नियम से सब अच्छा होता है । सभी धर्मयुक्त कार्यक रने पर भी कठिनाई आये तो यह आपतकाल है । इस समय अपनी 'श्रद्धा' हट जाती है । इस समय स्थिर रहना चाहिए । और ऐसा विचार करना चाहिए की यह अचानक अपनी आध्यात्मिक परीक्षा है । विद्यालय में शिक्षक कभी भी विद्यार्थी से प्रश्न पूछता है । नियमित विद्यार्थी धबराता नहीं है । उसे उत्तर आ जाता है । और जो धबरा जाता है उसी उत्तर नही आता है । अचानक परीक्षा का हमें पता चल जाता है । जीवन में नकारात्मक विचार नही लाना चाहिए । परीक्षा हमें मजबूत बनाती है । अपना ज्ञान बढता है । भगवान एक कदम आगे बढाने के लिये परीक्षा लेते है । परीक्षा देने से पूर्व प्रश्नपत्र शांति से पढना चाहिए । शांति से सोचकर लिखना चाहिए । तो प्रश्नपत्र अच्छा लिख सकते है । अच्छे पढने से उत्तर अच्छा लिखेगे । कठिन समय आने पर शांत पूर्वक बैठकर महाराज की क्या आज्ञा है । शास्त्र पढकर उत्तर खोजकर कठिनाई से बचा जा सकता है ।

अपना जीवन भगवान तक जाने के लम्बी यात्रा है । एक परीक्षा भी है . तो इस जीवन रुपी यात्रा में वचनामृत का अध्ययन करे । तथा पूरे जीवन में महाराज द्वारा बताये गये रास्ते पर चलने का पूरा प्रयास करें । जहाँ तक हो सके महाराजकी आज्ञानुसार जीवन जीने का प्रयास करे । ये विशेष ध्यान रखे कि महाराज ने वचनामृत में हरिभक्त को पूजा के लिये श्री नरनारायणदेव की मूर्ति रखने की आज्ञा दिये है । क्योंकि ? श्री नरनारायणदेव पूरे भरतखंड के राजा है । जिसकी पूजा में नरनरायणदेव नही है । वह वैसे ही जैसे पकवान में नमक नहीं मिलाया गया हो तो स्वाद नही आता है । पूजा में नरनारायणदेव के न रहने पर पूजा का फल नही मिलता है । महाराज की आज्ञा का पालन समस्त ब्रह्मांड के सत्संगीयो को प्रभावी पडता है । हम सब लोग कितने भाग्यशाली है कि भरतखंड के राजा ऐसे श्री नरनारायणदेव के महल में बैठकर हम सत्संग का लाभ ले रहे है . इस लिये उत्सव बाहर नहीं रखा है । क्योकि भरत खंड के राजा प्रांगण में बैठकर वचनामृत महोत्सव करे ऐसी भावना थी । इस लिये यह उत्सव नरनारायणदेव के प्रांगण में किया गया । किसी भी राज्य की प्रजा हो । राजा का महल देखने के लिये सभी लालाइत रहते है । देखने के बाद भाव आये इसमें रहने का अवसर मिले तो अच्छा है । गौरव अनुभव होगा । महल में शांति से बैठने का अवसर मिलेगा । ऐसे भरत खंड के राजा श्री नरनारयणदेव के महल में शांति से बैठे है । यह लाभ हमें बार-बार प्राप्त हो । इससे अच्छी किस्मत क्या होगी ? भगवान को हृदय में रखे । इससे प्रगति होगी । आज के दिन भगवान आप की सभी मनोकामना पूर्ण करे । ऐसी महाराज के चरणो में प्रार्थना ।

(अनु. पेईज नं. १९ से आगे)

इस लिये इस बात को ध्यान में रखकर संसार के मायाजाल में से समय निकालकर प्रभु की भक्ति-भजन अवश्य कर ले । उसे शास्त्र, ज्ञानी, सतपुरुष बुद्धिवाला कहते है । दूसरी तरफ यह कालचक्र रहटके चक्र की तरह धुमता रहता है । और जीवन का अंत हो जाता है ।

हम समय की प्रतिक्षा करते है । लेकिन समय अपनी प्रतीक्षा नहीं करता है । हमारे उपर दया भाव भी नही रखता है । इस संसार की सभी समस्यायों, कर्मो को समायोजित करके आत्म कल्याण हेतु भक्ति-भजन, सेवा, संत-मिलन, पुण्यकर्म कर लेना चाहिए । जो यह किया वही समय का सदुपयोग है ।

इसलिये भाई ! आलस्य को दूर करे, क्रिया-कलापो को समायोजित करके भगवान की भजन-भक्ति में समय दे ताकि ईश्वर की कृपा करें ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धर्नुमास धून महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से सम्प्रदाय के सबसे प्रथम महामंदिर में बिराजमान और सभी का मनोरथ पूर्ण करने वाले भरतखंड के राजाधिराज परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्य में ता. १६ दिसम्बर से १४ जनवरी २०२० तक प्रसादी के विशाल सभा मंडप में प्रात: ५-३० से ६-३० तक सर्वोपरि महामंत्र श्री स्वामिनरायण भगवान की धुन संत-हरिभक्त पूरे महीने करके इस मानव जीवन को सार्थक किये । चार हजार जितनी धुन और ५००० दैनिक धुन के यजमान बने थे । धुन कराने वाले को अलौकिक भेट भी दी गयी थी । हजारो श्रीहरि के भक्त प्रात: कडी ठंडक में उठकर भगवान की भजन करके मोक्ष और कल्याण के अधिकारी बने थे । इस अवसर पर पूरे महीने सुंदर और व्यवस्थित व्यवस्था का प्रबन्धकोठारी जे.के. स्वामी, जे.पी. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, कोठार स्टाफ, श्री नरनारायण युवक मंडल, संत पार्षद मंडल और नामी-अनामी सभी हरिभक्त प्रेरणादयक सेवा प्रदान किये थे । श्री नरनारायणदेव धर्मकुल और संत लोगो का आशीर्वाद प्राप्त किये । (शास्त्री नारायणमुनिदासजी)

सेक्टर-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर में वचनामृत ज्ञान वर्षा महोत्सव मनाना

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा शुभ आशीर्वाद से गांधीनगर सेक्टर-२३ में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १२-१२-२०१९ से ता. १५-१२-२०१९ तक वचनामृत शताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित वचनामृत ज्ञानवर्षा महोत्सव अधिक दिव्यता तथा उल्लास से मनाया गया था ।

उसके अन्तर्गत ता. १२-१२-२०१९ गुरुवार को वचनामृत महापूजन तथा श्रीहरियज्ञ का आयोजन दिव्यता से मनाया गया । चार दिन तक हुए इस मंगल महोत्सव में ''वचनामृत कथा प्रसंग'' वचनामृत आधारित रुपको, ज्ञानवर्षा नगर यात्रा, महाअभिषेक, महानिराजन, वचनामृत प्रश्नोत्तरी, बहनो का भक्ति सम्मेलन, वचनामृत अभिषेक, वचनामृत स्वाध्याय यज्ञ समापन संकल्प इत्यादि अनेक प्रकार के प्रेरणादायी और मोक्षदायी कार्यक्रम किये गये थे ।

विशेषकर ता. १४-१२-१९ शनिवार को प्रात: श्रीनरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री इस महोत्सव में पधारकर सम्पूर्ण सत्संग समाज को आशीर्वाद दिये गये ।इस अवसर पर उनके कर कमलो द्वारा शास्त्री स्वामी श्री हरिकेशवदासजीके द्वारा लिखित पुस्तक ''श्रीहरि चरित्र कथा'' का विमोचन किये थे । आशीर्वाद के समय प.पू. आचार्य महाराजश्री शास्त्री स्वामी द्वारा सम्पादित सत्संग साहित्य सेवा तथा उनकी विनम्रता की प्रशंसा किये थे ।

अपने मंदिर द्वारा वचनामृत ज्ञान वर्षा महोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक सेवाकीय सत्कार्य जैसे कि तीन हजार बच्चो को कापी दी गयी, नोटबुक, कलम, पेन्सिल का वितरण किया गया था । १२०० रोगियो को फल वितरित किया गया था । गाँधीनगर महानगर पालिका के तीन सौ पचास कर्मचारियो का अभिवादन किये, हमारे कालुपुर मंदिर द्वारा प्रकाशित वचनामृत ग्रंथ में आर्थिक समर्पण, निशुक्ल नेत्रनिदान कैम्प पूरे वर्ष किया गया । जिसका शिक्षित और अखबारो में ध्यान दिया ।

इस अवसर पर तीर्थो से बडी संख्या में संत हजारो हरिभक्तने महोत्सव का लाभ उठाये ।विदेश से भी हरिभक्त इस महोत्सव में आये थे । यह दिव्यता से मनाया गया था । वचनामृत ज्ञान वर्षा महोत्सव में आचार्य महाराजश्री के दर्शन और आशीर्वाद से सभी जगह स्वामिनारायण

भगवान और श्री नरनारायणदेव का जयजयकार था ।
(नारायण वी. जानी - गाँधीनगर)

श्रीहरि प्रतिष्ठा महोत्सव वडु

कडी तालुका का वडु गाँव श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण कमल से पावन और देश-विदेश में सत्संग में आगे है । इस गाँव के लोग देश-विदेश में निवास करते हरिभक्त तन, मन और धन की समहायता से और श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से और शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से बहनो का नया श्री स्वामिनारायण मंदिर केवल दस महीने में बन गया । जिसका श्रीहरि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २९-११-२०१९ से ता. ३-१२-२०१९ तक विधिवत पूर्ण किया गया ।

ता. २८-११-१९ के दिन सायंकाल ४ बजे पोथीयात्रा पारायण के मुख्य यजमान अ.नि. शशीबेन नारायणभाई अमथीदास पटेल द्वारा अ.सौ. ताराबेन विनोदभाई पटेल तथा अ.सौ. रीटाबेन किशनभाई पटेल (अमेरिका) के निवास स्थान से निकलकर गाते०बजाते, संत, ब्राह्मण तथा हरिभक्त वृंद साथ कथा मंडप में शायं ६ बजे पहुँचे थे । इसके बाद ता. २९-११-१९ के दिन श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा का प्रारम्भ प्रात: ९ बजे अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा वडनगर मंदिर के महंत शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गाँधीनगर) और यजमान परिवार द्वारा ग्रंथ और वक्ता श्रीका पूजन करवाया गया था । पाँच दिन तक कथा वाचको में स.गु. शा. स्वा. देवस्वरुपदासजी, माणसा महंतश्री, स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी (असारवा गुरुकुल), स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर), स.गु. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण गुरुकुल), स.गु. शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर) मंदिर द्वारा कथामृत का रसपान कराके भक्तजनो को भक्ति की धारा से सराबोर कर दिये ।

इस अवसर पर ११ सहिंतापाठी संतोने वचनामृत ग्रंथ का पाँच दिन पठनक रके वचनामृत द्विशताब्दी का पर्व मनाया । ता. ३-१२-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारकर नये श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी की मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे किये थे । तत्पश्चात भाईयो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में २० वें पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट की आरती उतारे, यज्ञ की आरती उतारे, पूर्णाहुति करके सभा में ग्रन्थ और वक्ता का पूजन करके कथा की पूर्णाहुति किये थे ।

बहनो के अति आग्रह से युक्त आमंत्रण से पधारे समस्त बहनो के धर्मगुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपद गीवालाश्रीने बहनो के मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी बहनो को आशीर्वाद दिये । अन्त में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पूरी सभा को आशीर्वाद दिये । सभा में अ.नि. रेवाबेन अम्बालाल नानदास पटेल परिवार द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी गयी थी । इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री श्री नितीनभाई पटेल विशेषकर हाजिर थे । इस प्रकार वडु गाँव मे नूतन हरिमंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव दिव्यरुप से मनाया गया था ।

(कोठारीश्री वडु मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शेर गाँव के शताब्दी (१०० वाँ) पाटोत्सव का उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव उसी प्रकार महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशधासजी तथा स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी) के सुंदर मार्गदर्शन अनुसार शेर गाँव (मांडल) के पास भव्य पाटोत्सव मनाया गया ।

अ.नि. स.गु. कृष्णदेवदासजी स्वामीने शेर गाँव में मंदिर का निर्माण कराये थे । इस मंदिर को १०० वर्ष पूरा हो जाने से मंदिर को रंग-रंगाई तथा पुनरुद्धार कराके महोत्सव के पूर्व ता. २९-११-१९ से ३-१२-१९ तक

१०० घंटे की अखंड धून का भव्य आयोजन किया गाय था। गाँव के सभी प्रेमी भक्तो के साथ सहकार से ता. ११-१२-१९ से १५-१२-१९ तक शताब्दी पाटोत्सव के अन्तर्गत पाँच दिन की श्रीमद् भगवत कथा पारायण स.गु. शा.स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी वक्ता पद पर विराजकर कथामृत का पान कराये थे । इस उत्सव पर ठाकुरजी को फल, सुखे मेवे तथा मिठाईयो का भव्य अन्नकूट रखा गया था। तीन दिन का भव्य विष्णुयज्ञ किया गया था । इस उत्सव के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर निजमंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारे थे । तथा सभी को आशीर्वाद प्रदान किये थे । उसी प्रकार महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने पुराने इतिहास परम्परा को बताये थे। इस उत्सव में तीर्थो से आये हुए। अनेक संत, सांख्ययोगी बहने आकर शोभा बढाये थे । उत्सव में आने वाले सभी हरिभक्त दिव्य आनंद की अनुभूति किये। (महंत के.पी. स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण जेतलपुरधाम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव तथा महाप्रतापी श्री रेतवी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की पूर्ण कृपा से तथा जेतलपुरधाम में स.गु. श्री आनंदानंद स्वामी द्वारा बढाये गये प्रसादी के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी (पी.पी. स्वामी) के सुंदर मार्गदर्शन से प.भ. श्री करशनभाई मनजीभाई हिराणी (गांधीधाम-कच्छ) यजमान पद से २४ वाँ पारायण जेतलपुरधाम में उल्लास पूर्वक पूर्ण किया गया।

श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रन्थ की पंचान्ह पारायण ता. १४-१२-१९ से १८-१२-१९ तक भव्यता से मनाई गई। जिसके वक्ता पद पर शा. धर्मनंदनदासजी स्वामी विराजमान थे । जेतलपुरधाम की महिमा भगवान श्रीहरि के लीला की अद्भूत बाते बताये थे। इस अवसर पर तीर्थो से संत आये थे । यजमान परिवारने सबको स्वागत किया तथा लोग यजमान को आशीर्वाद प्रदान किये थे।

(महंत के.पी. स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी मंदिर में विराजमान श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का दूसरा वार्षिक पाटोत्सव और उसके उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय विदूरनीति कथा का प्रबन्धस.गु. महंत शास्त्री यज्ञप्रकाशदासजी के वक्ता पद से हुई थी।

ता. ४-१२-१९ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा प्रातः ७ बजे ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक-अन्नकूट आरती विधिवत रुप से पूर्ण हुई। इसके बाद सभा में प.पू. महाराजश्री विराजमान हुए। यजमान परिवार प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारे एवम् आशीर्वाद प्राप्त किये । इस अवसर में अहमदाबाद, अंजली, कलोल, इसंड और गढपुर से संत आकर अमृतवाणी का लाभ दिये थे। पूरे कार्यक्रम में स.गु. शास्त्री स्वामी गुरुप्रसाददासजी स.गु. स्वामी आनंदप्रसाददासजी, भक्तिप्रसाद स्वामी और पार्षद नरोत्तम भगत आदिने पाटोत्सव में अन्नकूट, संत-हरिभक्तोने प्रसाद को उत्तम व्यवस्था किये थे । अंजलि मंदिर के महंत सगु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने सुंदर प्रवचन दिया था । हजारो हरि देवदर्शन, धर्मकुल दर्शन, कथा-वार्ता और प्रसाद ग्रहण कर धन्य हुए।

(हितेष मिनेषभाई पटेल - पंचवटी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीनगर (अहमदाबाद) वचनामृत उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से गोमतीपुर विस्तार में आये । अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री वचनामृत द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्रम में ता. ८-१२-१९ से प्रातः ८ से १० बजे तक वचनामृत ग्रंथ का पठन-पाठन हरिभक्तो ने किया था । श्रीजी स्वरुप स्वामीने वचनामृत कथा सभी को सुनाये थे । धर्नुमास में यहाँ के सभी भक्तो ने समूह में प्रातः ५-३० बजे श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन पूरे धनुर्मास में किया गया।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - गोमतीपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर वचनामृत द्विशताब्दी जयंती

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री वचनामृत द्विशताब्दी जयंती के उपलक्ष्य में ता. ३०-११-१९ के दिन सभी हरिभक्तो ने वचनामृत पाठ समूह में किये थे । ग्रन्थ का पूजन-अर्चन आरती उतार कर शायं ७-४५ पर कथा की पूर्णाहुति की आरती की गयी थी ।(मधुकर के. त्रिवेदी - बालासिनोर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट रजत जयंती के उपलक्ष्य में श्री वचनामृत पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से और महंत शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल-नारायणघाट के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में ता. १५-१२-१९ से ता. २१-१२-१९ तक नारायणघाट मंदिर के आगामी (२०२१) रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री वचनामृत (२७३) रात्रीय सप्ताह पारायण हमारे विद्वान संतो पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी श्री निर्गुणदासजी (असारवा गुरुकुल), स.गु. महंत शा. स्वामी हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा), स.गु. शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी (कांकरिया), स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच), स.गु. शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर) और स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णधासजी (आदरज) आदि संतो ने सम्प्रदाय के महान ग्रन्थ वचनामृत की दिव्य कथा का रसपान कराये थे।

नारायणघाट मंदिर की रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में २५ जितने धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रम पूर्ण हुए ।इस कथा पारायण में अनेक हरिभक्त विविधसेवा का यजमान बनकर अलौकिक लाभ उठाये थे । बहनो को दर्शन और आशीर्वाद का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे । पूरे कार्यक्रम के प्रेरक स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर) और मार्गदर्शक सगु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) रहे थे ।

सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. गोपालजीवनदासजी (प्रांतिज) सम्भाले थे । सभी भक्तो को भोजन रुपी प्रसाद खिलाया गया था । (कोठारी बालस्वरुपदासजी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली भव्य शाकोत्सव

मूलीधाम में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से सम्प्रदाय के महान कवि सम्राट स.गु. ब्रह्मानंद स्वामीने श्रीहरि के भरवाड वेश को महान प्रसादीभूत ज्ञान का २१-१२-१९ को शाकोत्सव मनाया गया ।

इस अवसर पर अनेक हरिभक्तो ने शाकोत्सव में विविधसेवा प्रदान किये थे ।

ज्ञानवाव के महिमा की कथा शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीने सुनाया था । तीर्थो से आये संत सांख्ययोगी बहनो और हजारो मूली देश के हरिभक्त आये थे । सम्पूर्ण अवसर पर सेवा में स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, कोठारी स्वा. हरिकृष्णदासजी, कोठारी व्रज स्वामी उसी प्रकार पार्षद भरत भगत आदि सेवा में लगे थे ।(कोठारी व्रज स्वामी - मूली)

मेमगा गाँव में वचनामृत कथा पारायण

मूलीधाम में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमका में ता. २६-११-१९ से ता. ३०-११-१९ तक वचनामृत की पंचान्ह पारायण शा.स्वा. सत्संग सागरदासजी तथा स्वा. त्यागवल्लभदासजी के वक्ता पद से हुई थी । जिससे गाँव के युवक अधिक संख्या में कथा सुनकर अधिक भावनशील हुए । इसके बाद प्रसादी की तलावडी पर भव्य शाकोत्सव मनाया गया था । जिसमें मूली और सुरेन्द्रनगर मंदिर से

संत आये थे । सभा का संचालन नित्यप्रकाश स्वामीने सम्भाला था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - महिला मंडल अच्छी सेवा दिये थे । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

रामगढ श्री स्वामिनारायण मंदिर का ६५ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मूली मंदिर के अन्तर्गत रामगढ श्री स्वामिनारायण मंदिर का ६५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव अच्छे से मनाया गया था । इस अवसर के क्रम में ता. २-१२-१९ से ४-१२-१९ तक स्वामी त्यागवल्लभदासजी तथा शा.स्वा. सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से वचनामृत ग्रंथ का त्रिदिवसीय कथा की गई थी । पाटोत्सव के दिन ठाकुरजी को सुंदर अन्नकूट किया गया था । प्रसंगोचित सभा में मूली और सुरेन्द्रनगर मंदिर के संतो ने अमृतवाणी का लाभ दिये थे । गाँव के सभी भक्तोने तन, मन और धन से सेवा प्रदान किये थे । सभा का संचालन स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने किया था । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन (वडतालधाम)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से अमेरिका में एलन-टाउन (वडतालधाम) श्री स्वामिनारायण मंदिर में यहाँ के धर्मकिशोर स्वामी की प्रेरणा से कार्तिक मास में तुलसी विवाह उल्लास के साथ मनाया गया । वर पक्ष, कन्या पक्ष तथा मामा पक्ष के यजमानोने अलौकिक लाभ लिया । स्वामीने तुलसी विवाहकां विस्तार पूर्वक महत्व समझाये थे । प्रेसि. प.भ. भीखाभाई पटेल और उनकी टीम रसोई की सुविधा अच्छी किये थे । हरिभक्त दर्शन करके धन्य हुए ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी अजयप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अपने कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में कार्तिक महिने में तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन पूर्ण किया गया था । जिस में शायं काल मेहदी की रस्म, रास, गरबा किया गया था । वर पक्ष, कन्या पक्ष और मामा पक्ष के हरिभक्त यजमान बनकर लाभ लिये थे । महंत स्वामी इस अवसर पर इस अवसर की गरिमा को समझाये थे । यजमान परिवार, सेवा करने वाले भाई बहनो को फूलहार से स्वागत किया गया था । मंदिर के भूदेव द्वारा सम्पूर्ण विधिशास्त्रोक्त रुप से पूर्ण किया गया था । (प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन टेक्सास

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के महंत सुव्रत स्वामी की प्रेरणा से कार्तिक महीने में अपने हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्यूस्टन में सभी हरिभक्त एक साथ मिलकर सुंदर तुलसी विवाह मनाये थे । दोपहर में भूदेवो द्वारा भगवान और तुलसीजी की वेदोक्त विधिसे विवाह किया गया । जिसमें वरपक्ष, कन्या पक्ष और ननिहाल पक्ष के हरिभक्त यजमान बनकर सुंदर लाभ लिये । शायंकाल में भव्य गरबा किया गया था । स्वामी ने तुलसी विवाह की महिमा का विस्तार से समझाये थे । सेवा प्रदान करने वाले सभी हरिभक्तो का सुंदर सम्मान किया गया । हरिभक्त दर्शन करके प्रसाद लेकर धन्य धन्य हो गये । (प्रविण शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

(१) शेर (ता. मांडल) श्री स्वामिनारायण मंदिर के शताब्दी महोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (२) श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२३ में ज्ञानवर्षा महोत्सव के अवसर पर स.गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी को सम्मानित करके पुस्तक का विमोचन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री । (३) कुकडवाल मंदिर में शाकोत्सव करते हुए संत - हरिभक्त

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

(१) प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से और भुज मंदिर के सहयोग से अपने कच्छ सीमा पर आये नव निर्मित भेटीयाबेट हनुमानजी मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की तसवीरे । (२) प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के निमंत्रण से बी.एस.एफ. के सैनिको का परिवार अपने कालुपुर मंदिर के दर्शन हेतु आये । उसी समय उन लोगो ने श्री स्वामिनारायण म्यूजियम की भी मुलाकात ली थी ।

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in

Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104

Follow Us @ nndkalupurmandir

Praful Kharsani